इकाई 8 अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम दक्खन के तीन प्रमुख राज्यों—अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा की राजनीतिक गतिविधियों पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- इनके आपसी और अन्य राज्यों के साथ संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे,
- इन राज्यों में शासक वर्ग की प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे, और
- इन तीन राज्यों के केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासन की रूपरेखा बता सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

बहमनी राज्य के पतन के बाद दक्खन में पांच राज्यों का उदय हुआ : अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर और बरार। कुछ समय पश्चात् बरार और बीदर पर उनके मजबूत पड़ोसियों का कब्जा हो गया। बाकी तीन मुगलों द्वारा अधिग्रहीत किए जाने तक (लगभग 100-150 सालों तक) फलते-फूलते रहे।

इस इकाई में मुख्य रूप से इन तीनों राज्यों की राजनीतिक गतिविधियों की चर्चा की जाएगी। आप पुर्तगालों और मराठों से उनके संबंधों को जान पाएंगे और इसके साथ ही साथ उनके आपसी संबंधों की जानकारी भी हासिल कर सकेंगे। आपको उनकी प्रशासनिक संरचना का ज्ञान भी हो पाएगा। इस काल में मुगलों के साथ भी इन राज्यों का संघर्ष हुआ। पर इसकी चर्चा हम अगली इकाई (इकाई 9) में करेंगे।

8.2 अहमदनगर

अहमदनगर के निजाम शाही राजवंश की स्थापना 1490 में मलिक अहमद निजामुल मुल्क बाहरी ने की थी। वह बहमनी साम्राज्य के प्रधानमंत्री मलिक हसन का बेटा था।

मलिक हसन ने अपने राज्य की शुरुआत कोंकण से की थी और 1510 ई. में उसकी मृत्यु के समय उसके राज्य की सीमा बीर से चौल तक और रावेडाण्डा के समुद्र तट तक और उत्तर में खानदेश के सीमांत से दक्षिण में पूना, चाकन और शोलापुर तक फैली हुई थी। दौलताबाद का किला भी उसके अधीन था। यह राज्य 1636 तक कायम रहा, बाद में मुगलों ने इसे अपने साम्राज्य में मिला लिया।

इस पूरे काल में अहमदनगर के शासकों को भी बाहरी आक्रमण से अपने क्षेत्र को बचाने के लिए सतत संघर्ष करना पड़ा। इसके साथ-साथ नये इलाकों पर आधिपत्य जमाने की कोशिश भी जारी रही। बरार का अधिग्रहण इस दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता थी।

1511 ई. में अहमदनगर को सबसे पहला धक्का तब लगा जब बीजापुर ने उससे शोलापुर छीन लिया। अहमदनगर के हुसैन निजाम शाह को दूसरा धक्का तब लगा जब गोलकुंडा, बीजापुर और विजयनगर की संयुक्त सेना ने उसे पराजित किया, पर वह अपने राज्य को बचाने में सफल रहा। शीघ्र ही हुसैन निजाम शाह ने अपने बेटी चांद बीबी की शादी बीजापुर के अली आदिल शाह के साथ कर दी। थोड़े समय बाद "1565 ई. में" बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर ने विजयनगर पर आक्रमण किया। इसके शासक रामराजा की हार हुई और इस युद्ध में वह मारा गया।

1565 ई. में हुसैन की मृत्यु हुई और उसके बाद 1588 ई. तक उसके पुत्र मुरतजा ने शासन किया। प्रथम छह वर्षों तक मुरतजा की मां खुनज़ा हुमायूँ ने शासन की बागडोर संभाली पर पड़ोसियों से बार-बार पराजित होने के बाद निजाम शाही सामंतों ने प्रशासन की बागडोर मुरतजा के हाथों में सौंप दी। मुरतजा ने 1588 में बरार को अपने राज्य में मिला लिया। वह अपने पुत्र हुसैन के हाथों मारा गया। पर हुसैन भी 1589 ई. में मारा गया।

1595 में चांद बीबी ने बहादुर को राज्य सिंहासन पर बैठाया और शासन की बागडोर खुद संभाल ली। उसे शक्तिशाली मुगलों का सामना करना पड़ा और अंततः उसे मुगलों को बरार सौंपना पड़ा। मुगलों के बढ़ते दबाव के कारण उसे अहमदनगर का किला समर्पित करना पड़ा। पर इसके परिणामस्वरूप उसके सरदारों ने उसकी हत्या कर दी और 1600 ई. में मुगलों ने अहमदनगर के किले पर कब्जा जमा लिया। बहादुर निजाम शाह को बंदी बनाकर ग्वालियर के किले में भेज दिया गया।

एक निजाम शाही सरदार मलिक अम्बर ने शाही परिवार के एक सदस्य को मुरतजा निजाम शाह-II के रूप में गद्दी पर बैठाकर राज्य की प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करने की कोशिश की। वह बराबर मुगलों का प्रतिरोध करता रहा। 1610 ई. में उसने षड्यंत्रकारी मुरतजा की हत्या कर डाली और उसके पुत्र को बुरहान निजाम शाह-III के नाम से स्थापित किया। उसके शासन काल में निजाम शाही फौजों और पुर्तगालियों के बीच छिटपुट लड़ाइयां हुईं। निजाम शाही फौजों पर मुगलों के दबाव के कारण बुरहान को पुर्तगालियों से संधि करनी पड़ी। 1616 ई. में मुगल सेनानायक शाह नवाज खाँ ने निजाम शाही राजधानी खिरकी को रौंद डाला लेकिन मलिक अम्बर ने पुनः इसे बसाया और मुगलों के प्रति आक्रामक रुख अपनाये रखा। बाद में, राजकुमार खुर्रम ने मलिक अम्बर को अहमदनगर किला और बालघाट के जिले समर्पित करने के लिए मजबूर कर दिया। हालांकि 1619-20 में मलिक अम्बर ने हारे हुए इलाके फिर से जीत लिए।

मलिक अम्बर न केवल एक सफल सेनानायक था बल्कि वह एक कुशल प्रशासक भी था। उसने राजस्व और सामान्य प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किए। 1626 ई. में उसकी मृत्यु के बाद अहमदनगर का भविष्य अंधकारमय प्रतीत होता था।

मराठों ने शाहजहां के अधीन मुगल साम्राज्य के खिलाफ अहमदनगर की सहायता करने की कोशिश की। शाह जी भोंसले ने मुरतजा निजाम शाह-III के नाम से शाही परिवार के एक सदस्य को गद्दी पर बैठाया। मुगलों का प्रतिरोध करते हुए उसने कई किलों पर कब्जा जमा लिया। पर शाहजहां ने 1636 ई. में मुहम्मद आदिल शाह को हार मानने पर मजबूर कर दिया। एक समझौते के तहत निजाम शाही राज्य का अंत कर दिया गया। इसके क्षेत्रों को मुगलों और बीजापुर राज्य के बीच बांट दिया गया। यह तय हुआ कि परेन्दा और शोलापुर के किले और उनसे जुड़े जिले, कल्याणी प्रांत और भीमा और नीरा नदी के बीच के निजाम शाही क्षेत्र पर बीजापुर के आदिल शाह का आधिपत्य रहेगा और इसके बदले में वह शाह जी को दबाने के लिए मुगलों की सहायता करेगा। गोलकुंडा के अब्दुल्ला कुतब शाह ने भी मुगलों से संधि की। राजकुमार औरंगजेब को दक्खन का राज्याध्यक्ष नियुक्त किया गया। उसने निजाम शाही किलों उदगीर और अउसा को अपने आधिपत्य में ले लिया। इसके साथ ही अहमदनगर राज्य लुप्त हो गया। शाह जी ने मुरतजा निजाम शाह-III को मुगलों को सौंप दिया और खुद बीजापुर भाग गया। मुरतजा को ग्वालियर के किले में बंदी बना लिया गया और इस प्रकार अहमदनगर राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया।

8.3 बीजापुर

1490 ई. में बहमनी साम्राज्य से ही टूट कर बीजापुर एक स्वतंत्र राज्य बना। बीजापुर 1686 तक स्वतंत्र रहा, इसके बाद औरंगजेब ने इसे अपने साम्राज्य में मिला लिया। 200 वर्षों के इस काल में यहां पर आदिल शाही राजाओं का शासन रहा। फारसी मूल का यूसूफ आदिल खां इसका संस्थापक था। वह बहमनी साम्राज्य के बीजापुर प्रांत का **तरफदार** (राज्याध्यक्ष) था। उसने 1490 ई. में अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया। रायचूर, गोवा, दभोल, गुलबर्गा और कल्याणी को जीत कर, उसने अपने छोटे राज्य-क्षेत्र का विस्तार किया। पर 1510 में पुर्तगालियों ने उससे गोवा छीन लिया। उसके उत्तराधिकारियों ने अपने राज्य-क्षेत्र की रक्षा और विस्तार का सतत प्रयत्न किया।

इस्माईल शाह ने अहमदनगर से शोलापुर छीनने की कोशिश की पर वह असफल रहा। बीदर का अमीर बारिद हमेशा

बीजापुर के खिलाफ षड्यंत्र करता रहता था। अतः इस्माईल शाह ने खुद जाकर उसे जिंदा गिरफ्तार किया। अमीर बारिद से बीदर छीन लिया गया और उसे बीजापुरी सरदारों में शामिल कर लिया गया। 1530 ई. में इस्माईल ने अलाउद्दीन इमाद शाह के साथ मिलकर विजयनगर साम्राज्य से रायचूर, दोआब और मुग्दल छीन लिया। इस्माईल ने पुरस्कार स्वरूप अमीर बारिद को बीदर लौटा दिया और बदले में उसे कान्धार और कल्याणी मिला। पर बीदर लौटने के बाद बारिद ने बुरहान के साथ संधि कर ली और बीजापुर को कान्धार और कल्याणी देने से इंकार कर दिया। अंततः इस्माईल ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया और उसे हरा दिया।

1534 ई. में इस्माईल ने सुल्तान कुली कुतुब मुल्क से कोविलकोंडा और गोलकुंडा छीनने का असफल प्रयत्न किया। बीजापुर लौटने के बाद, उसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गयी। उसका स्थान उसके बड़े युवराज मल्लू आदिल खां ने लिया, पर उसके व्याभिचारी व्यवहार के कारण उसकी दादी पुंजी खातून ने 1535 में उसे गिरफ्तार कर अंधा बना दिया। उसका स्थान उसके छोटे भाई इब्राहिम ने लिया। इब्राहिम पुर्तगालियों को सैलसिट और बारदेज का बंदरगाह देने के लिए बाध्य हुआ क्योंकि उन्होंने गोवा में शरण लेने वाले विद्रोही राजकुमार अब्दुल्ला पर नियंत्रण रखने के बदले में 1535 में यहां पर पहले ही अधिकार जमा लिया था।

नये सुल्तान अली आदिल शाह-I (1556-1580) ने विजयनगर के अदोनी, तोरगल, धारवाड़ और बंकापुर के किलों पर अधिकार जमा लिया पर विजयनगर की नयी राजधानी पेनूकोंडा पर वह कब्जा नहीं कर सका।

1580 ई. में अली आदिल शाह की हत्या हो गयी। उसके बाद उसके नाबालिग भतीजे इब्राहिम ने गद्दी संभाली, उसकी बुआ चांद बीबी उसकी संरक्षिका बनी। दरबारी राजनीति के कारण दस वर्षों के भीतर तीन संरक्षकों को उखाड़ फेंका गया। 1619 में बीदर राज्य पर कब्जा जमा कर इब्राहिम आदिल शाह ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की।

इब्राहिम का स्थान मुहम्मद आदिल शाह (1627-1656) ने लिया। उसने तीवी, बारदेर, सरजोर और कुल्तुली पुर्तगालियों से छीन लिये। उसके शासनकाल में यह राज्य अपनी प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा पर पहुंच गया। 1656 में उसकी मृत्यु के समय, इस राज्य की सीमा अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैल गयी और उसने मुगलों को किये गये भुगतान की भरपाई अधीनस्थ नायकों से नजराना लेकर की। मुहम्मद आदिल शाह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अली आदिल शाह द्वितीय (1656-1672) ने गद्दी संभाली। उसके शासन काल में मुगलों और मराठों के आक्रमण (देखिए इकाई 9, 10) के कारण राज्य की स्थिति कमजोर हो गयी। उसकी मृत्यु के बाद उसके चार वर्षीय पुत्र सिकन्दर (1672-1686) को सुल्तान घोषित किया गया। इस काल में विभिन्न धड़ों की लड़ाइयों, गोलकुंडा के हस्तक्षेप और मुगल और मराठा आक्रमणों के कारण यह राज्य बिखर गया। अंततः 1686 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब ने आदिल शाही फौजों को परास्त किया और उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

8.4 गोलकुंडा

कुतुब शाही राजवंश का संस्थापक सुल्तान क्यूल था वह कारा-क्यूनलू के तुर्कमान कबीले का सदस्य था। बहमनी सुल्तान शिहाबुद्दीन महमूद (1482-1518) के शासन काल में वह शक्तिशाली बना। उसे तेलंगाना प्रांत का राज्याध्यक्ष नियुक्त किया गया, जिसकी राजधानी गोलकुंडा थी। उसने कभी अपने को स्वतंत्र घोषित नहीं किया पर बहमनी शासकों की कमजोरी के कारण वह स्वतंत्र शासक के रूप में कार्य करता रहा। वह अंतिम शासक कलिमुल्ला के 1538 में मरने तक नाममात्र के बहमनी सुल्तानों को बहुमूल्य उपहार भेजता रहा।

उत्तर में राजकोंडा और देवरकोंडा दक्षिण में पानांगल और पश्चिम में धनपुरा जैसे बड़े किलों को जीतकर उसने अपने छोटे से राज्य का विस्तार किया। अब गोलकुंडा की सीमा विजयनगर और बीजापुर की सीमा को छूने लगी। उसने उड़ीसा से कुछ इलाके छीन लिए और अपने राज्य की सीमा गोदावरी-कृष्णा दोआब में एल्लोर और राजामुंदरी तक बढ़ा ली। गोदावरी नदी दोनों राज्यों की सीमा मानी गयी। उसने विजयनगर साम्राज्य से कोंडाविडु हासिल किया। उसने बीजापुर और बीदर के उसके राज्य पर कब्जा जमाने के इरादे को विफल कर दिया। 1543 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। उसका स्थान उसके पुत्र जमशेद कुली खां ने लिया। उसने अहमदनगर और बीजापुर के शासकों के बीच समझौता करवाकर और अली बारिद को बीदर वापस दिलवा कर दक्खनी सुल्तानों के बीच अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा ली। यह उसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। 1550 में उसकी मृत्यु हो गयी।

इब्राहिम (1550-1580) पहला कुतुब शाही सुल्तान था, जिसने औपचारिक रूप से एक स्वतंत्र शासक के रूप में राज्य किया और अपने नाम से सिक्के जारी किए। उसका उत्तराधिकारी मुहम्मद कुली कुतुब शाह (1580-1611) था। उसने 1591 में हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाया। उसके शासन काल में गोलकुंडा में अनेक यूरोपीय कारखाने स्थापित हुए। 1611 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी और उसके बाद उसका भतीजा मुहम्मद कुतुब शाह बना। नये शासक ने विस्तार के बजाय सुदृढ़ीकरण पर बल दिया। 1826 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी और उसके बाद उसका बड़ा पुत्र अब्दुल्ला कुतुब शाह शासक बना। यह कहा जा सकता है कि इसी के शासन काल से कुतुब शाही राज्य का पतन शुरू हुआ, क्योंकि इसी समय गोलकुंडा पर मुगलों का दबाव बढ़ने लगा। 1636 ई. में उसे "अधीनस्थता के मसौदे" और प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ा, जिसके अनुसार गोलकुंडा मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ हो गया। बाद में, उसने कर्नाटक

के कुछ इलाकों को अपने राज्य में मिला लिया। 1672 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसके दामाद अब्दुल हसन (1672-1687) ने गद्दी संभाली। अंततः 1687 ई. में औरंगजेब ने गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

बोध प्रश्न 1

1) स्वतंत्र राज्य के रूप में अहमदनगर के उदय का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) बीदर पर कब्जा जमाने में बीजापुर किस प्रकार सफल रहा?

....

....

....

....

....

3) गोलकुंडा राज्य की सीमा का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

8.5 बाह्य संबंध

अपने अस्तित्व-काल में इन दक्खनी राज्यों के आपसी संबंध और व्यवहार समय-समय पर बदलते रहे। उनका दक्षिण भारतीय राज्यों, मुगलों, मराठों और यूरोपीय शक्तियों से भी संपर्क हुआ। इस भाग में हम इस संपर्क के स्वरूप पर विचार-विमर्श करेंगे। मुगलों के साथ उनके संबंधों की चर्चा विस्तार से इकाई 9 में की जाएगी।

8.5.1 आपसी संबंध

इन तीन प्रमुख राज्यों का अपना संबंध उनके निजी स्वार्थों से तय हुआ करता था। उनके बीच ज्यादातर झगड़े राज्य-क्षेत्रों को लेकर हुआ करते थे। कभी-कभी दो मिलकर तीसरे का विरोध कर देते थे। कुछ ने बरार और बीदर जैसे छोटे राज्यों के साथ संधि की। यहां तक कि एक दूसरे का मुकाबला करने के लिए बाहरी शक्तियों से भी संधि की गयी।

अहमदनगर की बीजापुर के साथ पहली मुठभेड़ शोलापुर को लेकर हुई और वह हार गया। बुरहान के शासन काल में बीजापुर पर गुजरात ने खानदेश और बगलाना की सहायता से आक्रमण कर दिया। 1530 ई. में अहमदनगर और बीजापुर के बीच संधि हुई जिसके अनुसार अहमदनगर ने बरार पर और बीजापुर ने तेलंगाना पर अधिकार जमा लिया।

बीजापुर के इस्माईल ने अहमदनगर के बुरहान निजाम शाह प्रथम के साथ संधि की। उसने अपनी बहन की शादी बुरहान के साथ कर दी और दहेजस्वरूप शोलापुर देने का वादा किया। पर जब उसने शोलापुर बीजापुर के सुपुर्द नहीं किया तब उनके संबंधों में कटुता आ गई। बरार के अलाउद्दीन इमाद शाह की सहायता से बुरहान ने बलपूर्वक शोलापुर छीनना चाहा, पर वह असफल रहा। इसके बाद शोलापुर उनकी दुश्मनी का कारण बना रहा। 1526 ई. में एक बार फिर अमीर बारिद की सहायता से बुरहान ने शोलापुर पर कब्जा जमाना चाहा, पर वह असफल रहा।

शोलापुर के कारण अहमदनगर के साथ बीजापुर के संबंधों में कटुता आ गई, इस कटुता के लिए बुरहान का शिया और इब्राहिम का सुन्नी होना भी उत्तरदायी था। इसके अतिरिक्त अहमदनगर के विभाजन के लिए इब्राहिम का गुजरात और खानदेश के शासकों के साथ मिलकर षड्यंत्र करना भी अहमदनगर और बीजापुर के आपसी संबंधों के लिए घातक सिद्ध हुआ। 1542 ई. में अमीर बारिद की सहायता से बुरहान ने बीजापुर पर आक्रमण किया और शोलापुर पर कब्जा जमा लिया। पर बरार के शासक दरिया इमाद शाह की सहायता से इब्राहिम ने बुरहान को पीछे धकेल दिया। 1543 ई. में अमीर बारिद की मृत्यु के बाद बुरहान ने शांति की पहल की और उसने इब्राहिम को शोलापुर लौटा दिया।

1543 ई. में अहमदनगर, गोलकुंडा, बीदर, बरार और विजयनगर सभी ने बीजापुर के खिलाफ गठबंधन कर लिया। पर शीघ्र ही यह संधि टूट गयी और गोलकुंडा, विजयनगर तथा बीजापुर ने अहमदनगर का विरोध करना शुरू कर दिया। अंततः बीजापुर के हुसैन शाह ने विजयनगर के रामराजा के साथ संधि की। इस संधि के अनुसार, i) हुसैन द्वारा बीजापुर का कल्याणी पर अधिकार समाप्त, ii) हुसैन को इमाद शाही सेनानायक जहांगीर खां को मारना था जो युद्ध में बहुत सक्रिय रहा था, iii) हुसैन को रामराजा से पान ग्रहण करने के लिए विजयनगर जाना था। पर संधि शीघ्र ही टूट गयी। 1619 ई. में इब्राहिम आदिल शाह ने बीदर राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। इसके बाद अहमदनगर और बीजापुर में सतत संघर्ष होता रहा। अंततः 1625 में अहमदनगर शोलापुर पर कब्जा जमाने में सफल रहा।

बीजापुर के सरदारों के बीच की आपसी फूट तथा शिवाजी और मुगलों के आक्रमण के कारण बीजापुर का अस्तित्व संकट में पड़ गया। इसके अलावा राजकोष बिल्कुल खाली था। बीजापुर के शासक के निवेदन पर कुतब शाह ने कर्ज तो दिया पर इसके बदले में कुतुब शाही पेशवा मदन्ना के भाई अकन्ना को बीजापुर दरबार में सलाहकार नियुक्त करने की शर्त रख दी। इस दौरान बीजापुर पर कुतुब शाही प्रभाव अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया। 1597 में सोनीपत में बीजापुर, गोलकुंडा तथा अहमदनगर की संयुक्त सेना और मुगलों के बीच युद्ध हुआ पर इसमें संयुक्त सेना की हार हुई।

8.5.2 विजयनगर के साथ संबंध

दक्खनी राज्यों और विजयनगर के संबंध कटुतापूर्ण रहे। पर कई बार एक राज्य ने दूसरे राज्य के खिलाफ बीजापुर की सहायता की। पहली बार विजयनगर के साथ बीजापुर की मुठभेड़ हुई।

बीजापुर में व्याप्त नागरिक असंतोष तथा पुर्तगालियों और बीदर के अमीर बारिद द्वारा भड़काए जाने के कारण विजयनगर के कृष्णदेव राय ने 1512 में बीजापुर से रायचूर दोआब छीन लिया। 1520 ई. में इस्माईल ने दोआब पर पुनः कब्जा जमाना चाहा, पर उसकी बुरी तरह हार हुई।

1543 ई. में दक्खनी राज्यों ने बीजापुर के खिलाफ विजयनगर से संधि की। विजयनगर ने रायचूर दोआब पर कब्जा जमाया और शोलापुर अहमदनगर ने ले लिया। कुछ समय बाद विजयनगर, बीजापुर और गोलकुंडा ने अहमदनगर के खिलाफ गुटबंदी की। उन्होंने अहमदनगर पर घेरा डालकर उसे पराजित किया। दक्खनी सुल्तानों के आपसी मनमुटाव और युद्धों के कारण विजयनगर का रामराजा बहुत शक्तिशाली हो गया और दक्खनी राज्यों के प्रति उसका व्यवहार तानाशाहीपूर्ण रहा। इसके कारण उसके खिलाफ एक गठबंधन तैयार हुआ।

एकता के लिए संधि का प्रयत्न किया गया। हुसैन निजाम शाह ने अपनी बेटी चाँद बीबी की शादी अली आदिल शाह प्रथम के साथ कर दी और दहेजस्वरूप शोलापुर दे दिया। अली आदिल शाह प्रथम ने अपनी बहन की शादी हुसैन निजाम शाह के बेटे मुरतजा से कर दी। उसकी दूसरी बेटी की शादी इब्राहिम कुतुब शाह के साथ हुई। इसके बाद उन्होंने विजयनगर के खिलाफ युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए अली आदिल शाह प्रथम ने रामराजा के पास दूत भेजा और यादगीर, बागलकोट, रायचूर और मुद्गल के किलों को लौटाने की मांग की। पिछले कुछ वर्षों से इन पर विजयनगर का आधिपत्य था। रामराजा ने ऐसा करने से मना कर दिया तथा आदिल शाही दूत को दरबार से बाहर निकलवा दिया। इसके बाद हुसैन निजाम शाह, इब्राहिम कुतुब शाह, अली आदिल शाह और अली बारिद की संयुक्त सेना विजयनगर की ओर बढ़ी। 27 जनवरी 1565 को बस्ती हट्टी या तालीकोटा (राक्षस और तंगंदी नामक गांवों के बीच स्थित) में दोनों सेनाओं के बीच युद्ध हुआ जिसमें विजयनगर की सेना बुरी तरह पराजित हुई और रामराजा मारा गया। इसके बाद विजयनगर साम्राज्य की शक्ति और प्रतिष्ठा को भारी आघात पहुंचा।

8.5.3 मराठों के साथ संबंध

तीनों दक्खनी राज्यों में, अहमदनगर का मराठों के साथ कभी कोई महत्वपूर्ण संघर्ष नहीं हुआ। पर बीजापुर और गोलकुंडा के साथ उनकी मुठभेड़ें हुईं। यहां हम संक्षेप में मुठभेड़ों और संघर्षों की चर्चा करेंगे। (विस्तार के लिए इकाई 10 देखिए।)

1650 ई. के बाद शिवाजी ने बीजापुरी क्षेत्रों में आक्रमण करना शुरू किया। 1650 और 1656 के बीच उसने पुरन्दर, कल्याणी, भिवंडी, माहूली, जावली, श्रीनगरपुर और रायरी पर कब्जा जमा लिया। अतः कोंकण बंदरगाह को छोड़कर वह आदिल शाही राज्य के उत्तरी-पश्चिमी कोने का एकछत्र बादशाह हो गया।

1659 ई. में शिवाजी ने बीजापुर के सरदार अफजल खां की हत्या कर दी, पश्चिमी तट के पन्हाला और अन्य किलों पर कब्जा जमा लिया और 1660 ई. में दभोल पर आधिपत्य कर लिया। कोल्हापुर पर भी उसका अधिकार हो गया पर इसी वर्ष बीजापुर ने उससे पनहाला हासिल कर लिया। इसके बाद आदिल शाह और शिवाजी के बीच संधि कायम

हुई जिसके तहत बीजापुर राज्य के उत्तरी-पश्चिमी भाग में हुई शिवाजी की सभी जीतों को मान्यता दे दी गई, इसके बदले में शिवाजी ने बीजापुर पर हमला न करने का वादा किया। पर शिवाजी ने अपना वादा पूरा नहीं किया।

1665 ई. में जयसिंह के नेतृत्व में मुगलों ने बीजापुर को जीतने असफल प्रयत्न किया। इसी समय मुगलों और शिवाजी के बीच हुई पुरन्दर की संधि के मुताबिक शिवाजी को बीजापुर पर आक्रमण करने की अनुमति मिल गयी। जब अली आदिल शाह द्वितीय ने देखा कि शिवाजी के साथ मुगलों की शक्ति है तो उसने संघर्ष करने का इरादा छोड़ दिया। एक संधि हुई जिसके अनुसार शोलापुर और उसके आसपास के इलाके मुगलों को दे दिए गए। शिवाजी का आक्रमण टल गया।

1672 ई. में अली आदिल शाह की मृत्यु के बाद उसका चार वर्षीय पुत्र सिकन्दर गद्दी पर बैठा। शिवाजी ने बीजापुर में व्याप्त अव्यवस्था का पूरा फायदा उठाया। 1673 ई. में उसने पनहाला, पाकूली तथा सतारा पर कब्जा जमा लिया और हुबली को लूट लिया।

बीजापुर के अफगान और दक्खनी सरदारों के आपसी मनमुटाव के कारण शिवाजी बीजापुर क्षेत्रों पर आक्रमण करने में सफल रहे। 1675 ई. में उन्होंने फोंडा, सुंडा, करवार, अंकोला और काढ़ा पर कब्जा कर लिया। इसके बाद शिवाजी ने कुतुब शाह के साथ संधि की जिसके अनुसार उसे बीजापुर के खिलाफ आक्रमण करते रहने के लिए प्रति महीने 4.5 लाख रुपये का अनुदान मिलते रहना था। कुतुब शाह ने शिवाजी को 5000 की फौज के रूप में सहायता देने का भी वचन दिया। शिवाजी ने वादा किया कि उसके पिता की जागीर के अलावा अन्य स्थानों पर किए गये आधिपत्य का आधा-आधा बंटवारा किया जाएगा। तब शिवाजी ने जिंजी और वेलोर पर कब्जा कर लिया कोलेरून नदी तक के इलाके पर आधिपत्य जमा लिया और तब बेलगाम लौट आया।

इसके साथ-साथ शिवाजी ने गोलकुंडा पर भी आक्रमण किया। 1677 ई. में वह अब्दुल हसन कुतुब शाह के पास गया और उसके साथ एक संधि की, जिसके अनुसार i) जब तक शिवाजी अपने पिता की जागीरें वापस नहीं ले लेता है तब तक अभियान के लिए कुतुब शाह द्वारा 3000 रु. प्रतिदिन के हिसाब से शिवाजी को भुगतान किया जाना था। ii) अभियान समाप्त होने के बाद कर्नाटक के उन इलाकों को, जो शिवाजी के पिता की जागीर के हिस्से न थे, कुतुब शाह के सुपुर्द किया जाना था।

8.5.4 यूरोपवासियों के साथ संबंध

यूरोपवासियों में सबसे पहले पुर्तगालियों का दक्खनी राज्यों के साथ संबंध स्थापित हुआ। इसके बाद डच और अंग्रेजों ने संबंध स्थापित किए। आपने खंड 1 में पढ़ा है कि किस प्रकार पुर्तगालियों ने गोवा और उसके आसपास के इलाकों में अपने को स्थापित किया। इस प्रक्रिया में दक्खनी राज्यों के साथ उनका संघर्ष हुआ।

अहमदनगर की स्थापना के तुरंत बाद इसके सुल्तान निजाम शाह को पुर्तगालियों के रूप में संकट का सामना करना पड़ा। उसने पश्चिमी तट से पुर्तगालियों को भगाना चाहा। अहमदनगर और पुर्तगालियों के बीच दो बार युद्ध हुए। निजाम शाह की इजाजत से मिस्र और गुजरात की नौसेना चौल आई और पुर्तगालियों को 1508 में पराजित कर दिया। पर अगले वर्ष पुर्तगालियों ने मिस्र और गुजरात के इस संयुक्त मोर्चे को पराजित कर दिया। पुर्तगालियों और निजाम शाह के बीच संधि पत्र पर हस्ताक्षर हुए, जिसके अनुसार i) निजाम शाह को युद्ध के हरजाने के रूप में 30,000 **क्रूज़ाडोज** का भुगतान करना था, ii) उसे प्रतिवर्ष 10,000 **क्रूज़ाडोज** का भुगतान करने का वादा करना पड़ा। पर निजाम शाह ने 2000 **क्रूज़ाडोज** का ही भुगतान किया।

उसके उत्तराधिकारी बुरहान खां ने भी पुर्तगालियों से अच्छे संबंध बनाए रखने की कोशिश की। गुजरात और खानदेश के शासकों को परास्त करने के लिए उसने पुर्तगालियों के साथ संधि की और रावेडांडा और चोल में किला बनाने की अनुमति पुर्तगालियों को दे दी।

बीजापुर तथा अहमदनगर के शासकों और कालीकाट के जमोरिन ने पुर्तगालियों के खिलाफ गठबंधन किया और उन्हें पश्चिमी तट से भगाने का असफल प्रयत्न किया। 1571 ई. में बीजापुर और अहमदनगर ने पुर्तगालियों के साथ संधि कर ली।

लेकिन कुछ समय बाद अहमदनगर की फिर से पुर्तगालियों के साथ मुठभेड़ हो गई। पुर्तगालियों ने मक्का से आते हुए तीर्थयात्रियों के जहाजों पर आक्रमण कर दिया था। बीजापुर का भी पुर्तगालियों से वैमनस्य था और उसे अवसर की प्रतीक्षा थी। जल्दी ही उन्हें यह अवसर मिल गया।

मुहम्मद आदिल शाह के शासन के दौरान भारत के पश्चिमी तट पर डच व्यापार के लिए आये। बीजापुर के शासकों ने पुर्तगालियों का सामना करने के लिए उनसे संधि कर ली। उसने उन्हें व्यापार करने के लिए कुछ रियायतें दी और वेनगुरला में कारखाने बनाने की इजाजत दे दी। उसने पुर्तगालियों के अधीन तीवी, बारडेस, सारजोरा और कलतूली इलाकों पर कब्जा जमा लिया। पर पुर्तगालियों ने वहां और सेना भेजी और बीजापुर को वापस खदेड़ दिया। गोलकुंडा भी यूरोपवासियों के संपर्क में आया।

डचों, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने भी भारत में अपनी व्यापारिक गतिविधियां शुरू कीं। गोलकुंडा ने डचों को मसूलीपट्टनम, निजामापट्टनम और पूलिकट में कारखाना स्थापित करने की इजाजत दे दी। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने 1611 में मसूली पट्टनम और नागपट्टनम में तथा 1621 में पूलिकट में कारखाने स्थापित किये।

बोध प्रश्न 2

1) विजयनगर के साथ दक्खनी राज्यों के संबंधों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) बीजापुर के साथ शिवाजी के संबंधों पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

3) पुर्तगालियों के साथ अहमदनगर के संबंध पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

8.6 प्रशासनिक संरचना

जैसा कि हम पहले पढ़ चुके हैं कि दक्खनी राज्य भूतपूर्व बहनी राज्य के टुकड़े थे। अतः उनके प्रशासनिक गठन में बहमनी प्रभाव दिखाई देता है। बहमनी काल की संस्थाएँ और प्रथाएँ कुछ बदलाव के साथ कायम रहीं।

इन तीनों राज्यों में लगभग एक प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्था थी। जहां जरूरत होगी वहां हम इनके बीच के अंतर को भी बताएंगे। सबसे पहले इन राज्यों के शासक वर्ग के बारे में बातचीत की जाए।

8.6.1 शासक वर्ग

दक्खनी राज्यों के शासक वर्ग में विभिन्न पृष्ठभूमि और समुदाय के सरदार शामिल थे। मोटे तौर पर बहमनी साम्राज्य में सरदारों के दो दल थे—दक्खनी और **आफाकी** या परदेशी (विवरण के लिए ऐच्छिक पाठ्यक्रम-03 की इकाई 28 पढ़िए)।

मूल रूप से दक्खनी भी बाहर से आये थे पर दक्खन में काफी पहले से आकर बस गये थे और इसमें हिन्दू धर्म परिवर्तित लोग भी शामिल थे। बरार में इमादशाही राजवंश का संस्थापक, फतहउल्ला इमाद शाह और अहमदनगर की सल्तनत का संस्थापक अहमद निजाम शाह इसके प्रमुख उदाहरण हैं। दोनों पहले ब्राह्मण थे, बाद में इन्होंने इस्लाम स्वीकार किया।

आफाकी या परदेसियों का आगमन काफी बाद में हुआ। वे 16वीं-17वीं शताब्दी के दौरान इन राज्यों में आकर बसते रहे। बीजापुर के आदिल शाही राज्य का संस्थापक युसूफ आदिल शाह भी **आफाकी** था।

अधिकांश **अफाकी** शिया थे जबकि ज्यादातर दक्खनी सुन्नी थे। इन दोनों वर्गों के भी कई उपवर्ग थे। इनमें ईरानी, तुर्क, अरब, ऐबीसीनियन (हब्शी), मिस्रवासी और भारतीय धर्मपरिवर्तित समुदाय प्रमुख हैं। कुछ मराठों को भी राज्य की सेवा में शमिल किया गया जो बाद में सामंत वर्ग में शामिल हो गये (मराठों के लिए इकाई 10 पढ़िए)।

ये शासक वर्ग सभी प्रकार के सैनिक, पुलिस, राजस्व और अन्य कार्य संभालता था। सुल्तान का कृपापात्र बने रहने तक ये सामंत केन्द्र या जिलों में शक्ति का उपभोग किया करते थे। अतः सुल्तान व्यक्तिगत निष्ठा की मांग करता था। सुल्तान या "प्रधानमंत्री" किसी भी पद को अवनत और स्थानांतरित कर सकता था उनका परिवेक्षण कर सकता था। सामंतों को अपने गुजारे और सेना के रख-रखाव के लिए वेतन के रूप में जागीरें दी जाती थीं।

सामंतों का यह बहुजातीय मिश्रित समुदाय विभिन्न दबावों और परिस्थितियों के कारण आपस में और कभी-कभी सुल्तान से टकराता रहता था। जब भी उन्हें मौका मिलता वे अपने मनपसंद व्यक्ति को सुल्तान के पद पर बैठाना चाहते थे। इसकी पुष्टि के लिए कुछ उदाहरण पेश करना उपयुक्त होगा।

1510 ई. में बुरहान शाह के राज्य सिहांसन पर बैठने के समय मतभेद उभर कर सामने आये। उसके बाद उसके नाबालिग पुत्र हुसैन ने गद्दी संभाली। मुकम्मल खां सरदारों के दक्खनी धड़े का प्रतिनिधित्व करता था और वह अहमद के शासन काल से ही वकील और पेशवा था। वह अपने पद पर बना रहा। बुरहान अभी बच्चा था। अतः मुकम्मल खां ने अपनी शक्ति का खुलकर उपयोग किया। इस बीच **अफाकियों** (मुख्यतः ईरानी और तुर्की) ने बुरहान निजाम शाह प्रथम को अपदस्थ करने और उनके भाई राजाजी को सिंहासन पर बैठाने की असफल कोशिश की।

शाह ताहीर (ईरान से आया एक शिया दार्शनिक) के समझाने पर बुरहान ने न केवल शिया धर्म स्वीकार कर लिया बल्कि इसे राज्य का धर्म भी घोषित कर दिया। सुन्नी सरदारों ने बुरहान को अपदस्थ कर उसके सुन्नी पुत्र अब्दुल कादिर को गद्दी पर बैठाने का प्रयत्न किया। पड़ोसी शासकों ने भी अहमदनगर पर आक्रमण किया पर उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिली। पर 1589 ई. में सरदारों का एक समूह अपने मनपसंद व्यक्ति को गद्दी पर बैठाने में सफल रहा।

हुसैन निजाम शाह प्रथम के पोते और बुरहान के पुत्र इस्माईल को सुल्तान बनाने में मुख्य हाथ **अफाकियों** का था। लेकिन दक्खनी नेता जमाल खां, जो एक महदवी (एक मुस्लिम सम्प्रदाय) था, ने विद्रोह कर दिया और अफाकियों पर वर्चस्व कायम कर लिया। उसने महदवीवाद को राज्य धर्म भी घोषित करवा दिया। इब्राहिम निजाम शाह की मृत्यु (1595) के बाद एक बार फिर अहमदनगर दरबार में दक्खनियों और हब्शियों (ऐबीसीनियन) के बीच जोरदार संघर्ष हुआ।

दक्खनी दल के नेता और पेशवा मियां मंझू ने अहमद नामक एक ऐसे व्यक्ति को गद्दी पर बैठा दिया, जो सीधे तौर पर शाही खानदान से नहीं जुड़ा हुआ था। हब्शियों के नेता इखलास खां ने बाजार से एक बच्चे मोती शाह को उठाकर उसे गद्दी पर बैठाने का प्रयत्न किया था। एक अन्य नेता अभंग खां ने बुरहान निजाम शाह के बेटे अली की वकालत की जबकि चांद बीबी (हुसैन निजाम शाह प्रथम की बेटी और अली आदिल शाह प्रथम की विधवा) ने इब्राहिम निजाम शाह के नाबालिग पुत्र बहादुर के दावे को सामने रखा। मियां मंझू ने राजकुमार मुराद और गुजरात के मुगल राज्याध्यक्ष अब्दुल रहीम खान खाना को सहायता के लिए बुलाया। अकबर ने इसके लिए स्वीकृति दे दी। वे इसके लिए तैयार बैठे थे। अकबर के निर्देश पर राजा अलीखां भी उनके साथ चल पड़ा। पर मुगल सेना के अहमदनगर पहुंचने के पहले मंझू ने ऐबीसीनियनों को काबू में कर लिया।

अब उसने मुगलों को बुलाने की गलती स्वीकार की, चांद बीबी सहित अपने सभी विरोधियों से समझौता किया, मुगलों के खिलाफ गठबंधन बनाने के लिए बीजापुर और गोलकुंडा के शासकों को आमंत्रित किया और उनकी फौजों को जल्द से जल्द तैयार करने के लिए बीजापुर और गोलकुंडा की ओर रवाना हुआ। उसकी अनुपस्थिति में चांद बीबी ने बहादुर को गद्दी पर बैठा दिया और राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

मलिक अम्बर की मृत्यु के बाद एक बार फिर सरदारों में आपसी टकराव हुआ। उसके पुत्र फतह खां ने **वकील** और पेशवा का पद संभालने पर तथा उसके गर्म मिजाज और नकारात्मक रवैये के कारण दक्खनी और ऐबीसीनियनों के बीच ईर्ष्या भाव और तेज हो गया और बहुत से सरदार मुगलों की शरण में चले गये।

सुल्तान यूसुफ आदिल खां की मृत्यु (1510) के बाद बीजापुर में भी यही स्थिति हुई। उसका बेटा और उत्तराधिकारी इस्माईल अभी बच्चा था, अतः कमाल खां उसका संरक्षक बना। उसने दक्खिनयों को प्रोत्साहित किया, **अफाकियों** को दबाया और उन्हें पूरी तरह से अलग-अलग कर दिया, शिया धर्म को हटाकर उसके स्थान पर सुन्नी धर्म को राज्य का धर्म घोषित किया। इसके बाद खुद सुल्तान बनने की कोशिश की पर इस्माईल की मां और चाची ने एक षड्यंत्र रच कर महल में उसे मार डाला।

उसके बाद बीजापुर में दक्खनी सरदारों का वर्चस्व समाप्त हो गया। **अफाकियों** को गुजरात से बुलाया गया, जहां उन्होंने शरण ले रखी थी और शिया धर्म को पुनः राज्य का धर्म घोषित कर दिया गया।

बीजापुर में सुल्तान इब्राहिम शाह ने अपने सरदारों को दबाना चाहा। उसने सुन्नी धर्म को राज्य का धर्म घोषित कर दिया और काफी संख्या में **अफाकियों** को निलंबित कर दिया, जिन्होंने अहमदनगर और विजयनगर में शरण ली।

इब्राहिम की मौत के बाद उसके बेटे ने नीति बिल्कुल बदल दी। 1558 ई. में अली ने इब्राहिम आदिल शाह की जगह ली, शिया धर्म को राज्य धर्म घोषित किया तथा **अफाकियों** को प्रोत्साहित किया। कल्याणी और शोलापुर प्राप्त करने के लिए उसने अहमदनगर के खिलाफ विजयनगर से संधि की और इस उद्देश्य से उसने विजयनगर की यात्रा भी की।

इब्राहिम के बाद मुहम्मद आदिल शाह गद्दी पर बैठा। दक्खनी सरदारों ने गद्दी पर बैठने में उसकी मदद की थी, अतः वे उसके शासन काल में शक्तिशाली हो गये।

8.6.2 केन्द्रीय प्रशासन

राज्य की शक्ति और सत्ता पूर्ण रूप से सुल्तान के हाथों में केन्द्रित थी। सभी दक्खनी राज्यों में सुल्तान की सेना का सर्वोच्च अधिकारी और राज्य का सर्वोच्च कार्यकारी नायक माना जाता था। व्यावहारिक तौर पर सुल्तान का पद पैत्रिक था। अगर कोई सीधा उत्तराधिकारी नहीं होता था तो भी उसी परिवार के किसी सदस्य को उम्मीदवार बनाया जाता था। उत्तराधिकारी के नाबालिग होने की स्थिति में शासन प्रतिशासक चलाया करते थे। सुल्तान के हाथ में सारी शक्ति रहने के कारण प्रशासन काफी केन्द्रीकृत था। प्रशासन चलाने के लिए कई विभाग थे।

राज्य में दो प्रकार का प्रशासनिक गठन था : i) केंद्रीय प्रशासन, ii) प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन। यहां हम लोग संक्षेप में दक्खन के मुख्य प्रशासनिक निकायों पर विचार-विमर्श करेंगे।

परामर्श दाता समिति

सुल्तान की परामर्श दाता समिति या परिषद में सरदार, **उलेमा** (इस्लाम धर्म से संबंधित धार्मिक व्यक्ति), कुछ अन्य अधिकारी और सुल्तान के मित्र हुआ करते थे। बीजापुर और गोलकुंडा में इस समिति का अस्तित्व औपचारिक था। बीजापुर में इसे **मजलिस खलवत** और गोलकुंडा में **मजलिस दीवान दारी** या **मजलिस खास** कहते थे। परिषद् का कोई बना बनाया ढांचा नहीं था। सुल्तान के कृपापात्र बने रहने की स्थिति में प्रमुख व्यक्तियों को इसमें आमंत्रित किया जाता था। सुल्तान सभी महत्वपूर्ण मसलों पर परिषद् की राय लेता था।

केन्द्रीय मंत्री

प्रशासनिक दृष्टि से विभिन्न कार्यों को देखने के लिए विभिन्न विभाग थे। प्रत्येक बड़े विभाग का मुखिया एक मंत्री होता था। विभागों और मंत्रियों की संख्या निश्चित नहीं थी और इसमें हमेशा बदलाव आता रहता था। **क़ाज़ी** (न्यायाधीश) के अलावा सभी मंत्रियों को सेनानायक का पद दिया जाता था। आमतौर पर सुल्तान नीति निर्धारण करता था, उसका पालन करना मंत्रियों का उत्तरदायित्व था।

पेशवा और वकील अल सल्तनत

यह दक्खन राज्यों का सर्वोच्च मंत्रालय था। कभी-कभी इन दोनों नामों को एक में मिला दिया जाता था। बीजापुर में आमतौर पर **वकील-अल-सल्तनत** का प्रयोग होता था। वहां केवल एक बार पेशवा पद का प्रयोग हुआ था जब इब्राहिम आदिल शाह ने अफजल खां को पेशवा नियुक्त किया था। हालांकि गोलकुंडा और अहमदनगर में पेशवा पद का प्रयोग होता था, पर अहमदनगर में पेशवा और **वकील** एक ही व्यक्ति होता था और वह राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता था। गोलकुंडा में **वकील** पद का इस्तेमाल कभी-कभी ही होता था। सुल्तान के नीचे ये पद सर्वोच्च थे और इनके पास अपार शक्ति होती थी। राज्य के सभी मामले उनके पास कार्यान्वयन के लिए आते थे। बीजापुर के छह सुल्तान नाबालिग थे और **वकील-अल-सल्तनत** ने प्रतिशासक या संरक्षक की भूमिका निभाई। अहमदनगर में भी सुल्तान के नाबालिग होने की स्थिति में **वकील** ने प्रतिशासक या संरक्षक की भूमिका निभाई। वे प्रशासन के प्रमुख थे, कायदे और कानून बनाते थे और कभी-कभी राजस्व और सैनिक मामलों पर भी नियंत्रण रखते थे।

मीर जुमला या जुमलातुल मुल्क

बीजापुर और गोलकुंडा में **वकील** के बाद **मीर** जुमला महत्वपूर्ण मंत्री था। बीजापुर में कभी-कभी एक ही आदमी **वकील** और मीर जुमला का कार्यभार संभालता था (उदाहरण के लिए इब्राहिम आदिल शाह के समय असद खां, आदिल शाह प्रथम के शासन काल में मुस्तफा खां और अफजल खां, इब्राहिम-द्वितीय के काल में इखलास खां और दिलावर खां)। इस पद को संभालने वाले व्यक्ति को वित्तीय और राजस्व संबंधी मामलों की देखरेख करनी पड़ती थी। बीजापुर में राजस्व के मामले में **मीर जुमला** की सहायता के लिए **मुस्तफी अल मुल्क** होता था। इनके साथ कई अधीनस्थ कर्मचारी होते थे, इनमें से अधिकांश हिंदू होते थे। अहमदनगर में वित्तीय और राजस्व के मामलों की देखभाल **वजीर** करता था। **दीवान** (कायदे-कानून के लिए) और **नाज़िर** (वसूली के लिए राजस्व अधीक्षक) उसकी सहायता करते थे।

गुप्तचर विभाग

इसका काम सूचनाएँ इकट्ठी कर उन्हें सुल्तान तक पहुंचाना था। युद्ध के समय दुश्मन की गतिविधियों की सूचना भी देनी होती थी।

सैनिक प्रशासन

जैसा कि पहले बताया जा चुका है राज्य सेना का सर्वोच्च नायक सुल्तान होता था। इस विभाग के देखरेख की जिम्मेदारी **वकील** या पेशवा पर थी। नियुक्ति, प्रशिक्षण, निरीक्षण और सेना को अस्त्र-शस्त्र की आपूर्ति इसके मुख्य कार्य थे। राज्य प्रत्यक्ष रूप में सेना का रखरखाव करता था। जैसा कि उपभाग 8.6.1 में जिक्र किया गया है, सरदार या जागीरदार

या प्रांतीय पदाधिकारी भी अपने पास फौज रखते थे। युद्ध के समय विशेष तौर पर सैनिकों की नियुक्ति होती थी पर युद्ध के बाद उन्हें मुक्त कर दिया जाता था। इस प्रकार के सैनिक दो प्रकार के होते थे : **बारगीर** ऐसे सैनिक होते थे जिन्हें घोड़े या अन्य सामान, औजार, हथियार राज्य की तरफ से दिए जाते थे और **सिलहदार** ऐसे सैनिक होते थे जिन्हें इस सबका इंतजाम खुद करना पड़ता था। उन्हें एक मुश्त अदायगी होती थी।

फौज में घुड़सवार, पैदल और तोपखाना तथा तटों की रक्षा के लिए नौसेना भी होती थी। पर इनकी नौसेना बहुत मजबूत नहीं थी और इनमें लड़ने की क्षमता नहीं थी। जागीरदारों के नियंत्रण वाली फौज का सेना विभाग निरीक्षण किया करता था। फौज में कई प्रजाति के सैनिक शामिल थे, जैसे ईरानी, तुर्की, अफगान, अबीसीनियन और भारतीय (हिन्दू और मुसलमान)।

कानून और न्याय

धार्मिक दान, अनुदान, कानून और न्याय के लिए एक पृथक् विभाग था। वरिष्ठ **काज़ी** इसका प्रमुख होता था। आमतौर पर विभिन्न धर्मों के लोगों के लिए अलग नागरिक कानून निर्धारित थे। सुल्तान भी मुकदमों का निपटारा किया करता था। आपराधिक मामलों में इस्लामी, स्थानीय और राज्य के कानून के मिलेजुले रूप का सहारा लिया जाता था।

अन्य महत्वपूर्ण अधिकारी

गोलकुंडा में पेशवा कार्यालय काफी बृहद् था और इसका केन्द्रीय कार्यालय **दबीर** या सचिव के अधीन था। इसके अलावा इस कार्यालय में दो मुख्य सचिव भी होते थे : i) **मुंशी उल मुमालिक** या प्रधान सचिव। वह **मजुमदार** या महा लेखापदाधिकारी के रूप में भी काम करता था। और ii) **दबीर** या **फरमान-ए-हिंदवी** का काम स्थानीय भाषाओं में पत्रव्यवहार करना था। इस पद पर कोई हिन्दू अधिकारी नियुक्त किया जाता था।

एक ऐसा विभाग भी था जो अन्य राज्यों के साथ के संबंधों की देख-रेख करता था। राजदूत के आदान-प्रदान का प्रचलन आमतौर पर था। यह विभाग अन्य राज्यों के साथ संबंधों तथा दूतों के आदान-प्रदान से संबंधित कार्यों की देख-रेख करता था।

8.6.3 प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन

इस इकाई के आरंभ में हमने आपको बताया था कि किस प्रकार बहमनी राज्य के प्रांत स्वतंत्र राज्यों के रूप में उदित हुए। बहमनियों के काल में इन प्रांतों को **तर्फ** और प्रांताध्यक्षों को **तर्फदार** कहा जाता था। पर इस स्तर पर प्रशासन का ढांचा नियमित नहीं था, न ही उपविभागों का स्पष्ट रूप में उल्लेख किया गया था। टीफेनथेलर (17वीं शताब्दी) ने बीजापुर के ग्यारह क्षेत्रों का उल्लेख किया है : बीजापुर, डेंघी, ओरसा, शोलापुर, धर, सिखर, लकमी, गडक, बहोर, बादाम, कोंकण (आठ परगना)। बीदर को राज्य में मिलाने के बाद इसकी संख्या बढ़कर 15 हो गयी। केवल गोवा के **आइनुल मुल्क** को प्रांतीय राज्याध्यक्ष माना गया। डी. सी. वर्मा (**बीजपुर का इतिहास**) के अनुसार बीजापुर में तीन प्रकार के स्थानीय प्रशासन प्रचलित थे : i) राजा की भूमि की देखरेख करने वाले अधिकारी जो **मीर जुमला** के अधीन थे, ii) जागीरदार अपनी जागीर संभालते थे वहाँ राजस्व वसूल करते थे, छोटी फौज की देखरेख करते थे और कानून व्यवस्था बनाए रखते थे और iii) कबीलाई मुखिया प्रशासन के मामले में स्वायत्त थे पर युद्ध के समय नियत नजराने और सैनिक भेजा करते थे।

शासकीय भूमि में कार्यरत अधिकारियों का स्थानांतरण किया जाता था। उनके पास नागरिक, सैनिक और न्यायिक शक्तियां होती थीं। प्रत्येक सरकार में चार प्रकार के अधिकारी होते थे : i) **सरहवलदार या सूबेदार** मुख्य प्रशासक थे, ii) राजस्व वसूल करने वाले अधिकारी, iii) लेखा की देखरेख करने वाले अधिकारी और iv) काजी।

सरकार परगनों में विभक्त थी। परगनों में राजस्व वसूली का काम देशमुख करता था जबकि देसाई लेखे की देखरेख करता था। सरकारों और परगनों में अधिकारियों को आमतौर पर **हुद्दीदार** (अधिकारी), **अमलदार** या **आमिल** कहा जाता था। गांव सबसे छोटी इकाई थी। यहां पटेल गांव का प्रधान होता था जो राजस्व वसूल करता था और पुलिस तथा न्यायिक प्रशासन भी उसके जिम्मे था। **कुलकर्णी** लेखा अधिकारी होता था। दोनों को **इनाम** (पुरस्कार) भूमि के रूप में वेतन दिया जाता था। चौकीदार को **महार** कहते थे, गांव के शिल्पकारों को **बलूतेदार या बारहबलूते** कहते थे। उदाहरण के लिए कुम्हार, मांग (छोटा कार्य), गुरोव (मंदिर और ग्रामीण देवता की देखभाल करने वाला), सुनार, बढ़ई और लुहार। गांव की जरूरत के मुताबिक प्रत्येक गांव में कारीगरों की संख्या अलग-अलग होती थी। वे ग्रामीणों की सेवा करते थे और इसके बदले उन्हें कटाई के समय अनाज से हिस्सा (**बलूता**) मिलता था।

अहमदनगर में प्रांतों की संख्या ठीक से नहीं बताई जा सकती है। इसके मुख्य भाग थे : बीर, बेरस, जूनार और चौल। प्रत्येक भाग एक प्रांतीय राज्याध्यक्ष या बहमनी राज्य के प्रांतीय प्रमुख **तरफ़दार** की भाँति के एक अधिकारी के अधीन था। इन सरदारों के पास कार्यकारी और न्यायिक अधिकार होते थे। वे फौज का रख-रखाव करते थे और कानून और व्यवस्था की देखरेख करते थे। प्रत्येक प्रांत **सरकारों**, परगनों और गांवों में विभाजित थे।

प्रत्येक **सरकार** में एक फौजदार, काजी, कोतवाल, कोषाध्यक्ष तथा राजस्व वसूलकर्ता होते थे। इसी प्रकार प्रत्येक सरकार परगनों या **महलों** या **कुरयात** में विभाजित थे। प्रत्येक परगना में कई गांव होते थे। ग्रामीण प्रशासन की देखभाल

पंचायत की सहायता से की जाती थी। राजस्व की वसूली देशपांडे नामक अधिकारी किया करता था।

गोलकुंडा में भी नियमित-निर्धारित प्रांतों का अभाव पाया जाता है। राज्य के प्रांत को **सिम्त** और इसके मुख्य प्रशासक को **सरसिम्त** कहा जाता था। एच. के. शेरवानी के अनुसार (**कुतुबशाही राजवंश का इतिहास**) सिम्त राज्य की अपेक्षा जिले के अधिक नजदीक थे। स्थानीय करों की वसूली हवलदार किया करता था। अपने क्षेत्रों में जागीरदार राजस्व की वसूली, कानून व्यवस्था और फौज का रखरखाव किया करता था।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित सरदारों पर दो-दो पंक्तियां लिखिए :

(क) दक्खनी

....

....

(ख) अफाकी

....

....

2) निम्नलिखित मंत्रियों के कार्यों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए :

(क) पेशवा

....

....

(ख) मीर जुमला

....

....

3) निम्नलिखित में से प्रत्येक के बारे में दो-दो पंक्तियां लिखिए :

(क) बलूतेदार

....

....

(ख) सरकार के प्रशासनिक अधिकारी

....

....

8.7 सारांश

इस इकाई में हमने तीन राज्यों : अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा का अध्ययन किया है। अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए ये आपस में हमेशा लड़ते रहे। 16वीं शताब्दी के अंत में मुगलों ने इन राज्यों की ओर ध्यान दिया। कई लड़ाइयाँ लड़ी गयीं। मुगलों ने सबसे पहले अहमदनगर को अपने साम्राज्य में मिलाया। 17वीं शताब्दी के अंत में मुगलों ने बीजापुर और गोलकुंडा पर भी अधिकार जमा लिया। इस काल में दक्खन क्षेत्र में मराठा एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरे। इसी काल में इस क्षेत्र में पुर्तगालियों और यूरोपीय शक्तियों का भी आगमन हुआ।

हमने इन राज्यों के प्रशासनिक ढाँचे का भी अध्ययन किया। इस प्रशासन में दिल्ली सल्तनत और दक्खन के तत्व मौजूद थे। बाद में इन राज्यों में मुगल प्रथाओं का भी समावेश हुआ।

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इसमें आपको अहमदनगर राज्य के उदय के आरंभिक चरण के बारे में बात करनी है। देखिए भाग 8.2
2) कई लड़ाइयों के बाद बीजापुर ने बीदर को 1619 ई. में अपने राज्य में मिला लिया। देखिए भाग 8.3
3) गोलकुंडा दक्खन का प्रमुख राज्य था और इसकी सीमा विस्तृत थी। देखिए भाग 8.4

बोध प्रश्न 2

1) दक्खन राज्यों का विजयनगर के साथ सतत् संघर्ष चलता रहा। कभी उन्होंने अकेले युद्ध किया। कभी विजयनगर के खिलाफ मिलकर लड़े। देखिए उपभाग 8.5.2
2) शिवाजी ने बीजापुर से कई बार लड़ाई की। वह कुछ इलाकों पर आधिपत्य जमाने में भी सफल रहा। देखिए उपभाग 8.5.3
3) पश्चिमी तट पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए पुर्तगाली और अहमदनगर हमेशा आपस में लड़ते रहे। देखिए उपभाग 8.5.4

बोध प्रश्न 3

इन प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दीजिए। इसके लिए भाग 8.6 पढ़िए और खुद उत्तर लिखिए।

परिशिष्ट

अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा राज्यों में सुल्तानों की सूची

1) **अहमदनगर का निजाम शाही राज्य**

i) अहमद निजाम शाह बाहरी (1496-1510)
ii) बुरहान निजाम शाह-प्रथम (1510-1553)
iii) हुसैन निजाम शाह-प्रथम (1553-1565)
iv) मुरतज़ा निजाम शाह-द्वितीय (1565-1588)
v) हुसैन निजाम शाह-द्वितीय (1588-1589)
vi) इस्माइल निजाम शाह (1589-1591)
vii) बुरहान निजाम शाह-द्वितीय (1591-1595).
viii) इब्राहिम निजाम शाह (अप्रैल-अगस्त 1595)
ix) अहमद निजाम शाह-द्वितीय (अगस्त-दिसम्बर 1595)
x) बहादुर निजाम शाह-प्रथम (1595-1600)
xi) मुरतज़ा निजाम शाह-द्वितीय (1600-1610)
xii) बुरहान निजाम शाह-तृतीय (1610-1631)
xiii) हुसैन निजाम शाह-तृतीय (1631-1633)
xiv) मुरतजा निजाम शाह-तृतीय (1633-1636)

2) **बीजापुर का आदिल शाही राज्य**

i) युसुफ आदिल खान (1489-1510)
ii) इस्माइल आदिल खान (1510-1534)
iii) मल्लू आदिल खान (1534-1551)
iv) इब्राहिम आदिल शाह-प्रथम (1535-1558)
v) अली आदिल शाह-प्रथम (1558-1580)
vi) इब्राहिम आदिल शाह-द्वितीय (1580-1627)
vii) मुहम्मद आदिल शाह (1627-1656)
viii) अली आदिल शाह-द्वितीय (1656-1672)
ix) सिकंदर आदिल शाह (1672-1686)

3) **गोलकुंडा का कुतुब शाही राज्यवंश**

i) सुल्तान कुली कुतबुल मुल्क (मृत्यु 1543)
ii) यार कुली जमशेद (1543-1550)
iii) सुभान (1550)
iv) इब्राहिम कुतुब शाह (1550-1580)

v) मुहम्मद कुली कुतुब शाह (1580-1611)
vi) मुहम्मद कुतुबशाह (1611-1626)
vii) अब्दुल्ला कुतुब शाह (1626-1672)
viii) अबुल हुसैन कुतुब शाह (1672-1687)